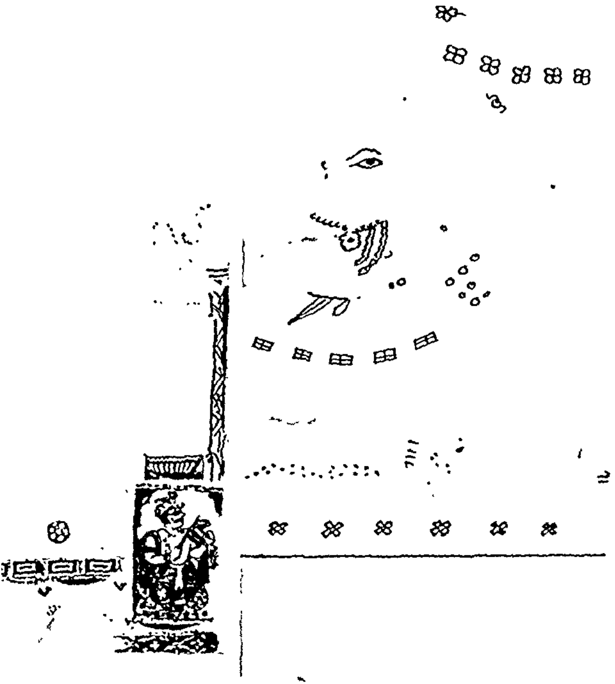
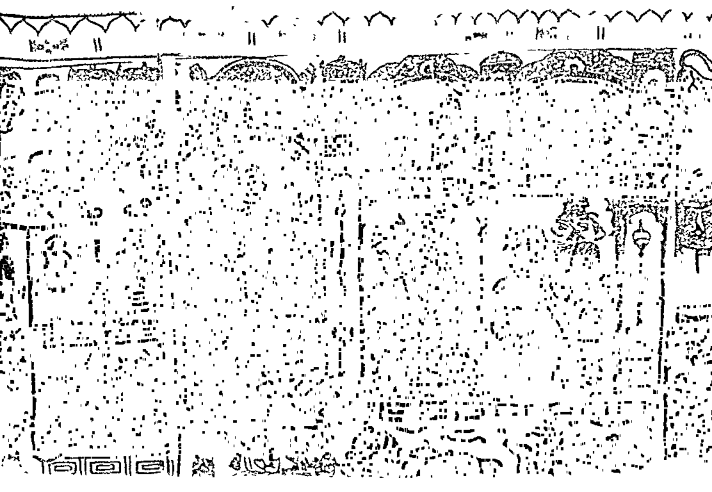




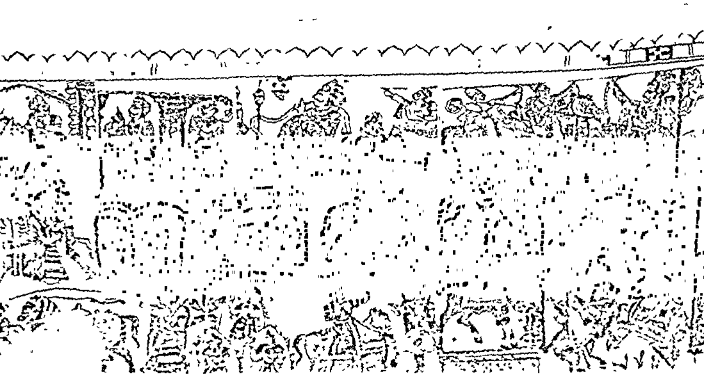


# बगड़ावत महागाथा



साहित्यागार, जयपुर

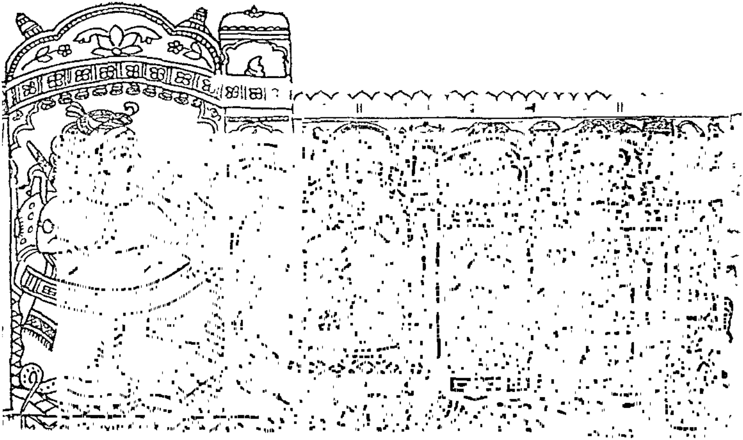


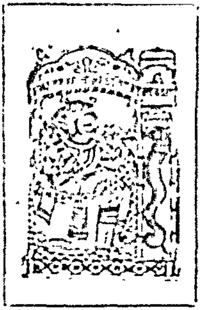


# बगड़ावत महागाथा

## चित्रकथा

अनंत कुशवाहा






| | |
|---|---|
| प्रकाशक | साहित्यागार<br>एम. एम. एस. हाइ-वे,<br>जयपुर–302 003 |
| राजस्थान | महागाथा |
| संस्करण | 1988 |
| मूल्य | पैंतीस रुपये |
| मुद्रक | प्रिन्ट 'ओ' लैण्ड, जयपुर |

# बगड़ावत महागाथा
## (सवाई भोज)

बगड़ावत-महागाथा सदियों से लोक-गाथा के रूप में चित्रांकित 'पड़' के सहारे मौखिक ही गायी जाती है मूल घटना संवत् 999 के लगभग की है । ऐसा माना जाता है कि इस गाथा की रचना छोटू भाट ने की थी । राजस्थान की पशु-पालक जाति—गूजरों के बीच यह कथा खूब प्रचलित है ।

लीला सेवड़ी ब्राह्मणी का विवाह हरिजी के साथ हुआ था । उनके जो पुत्र हुआ उसका सिर बाघ जैसा था । हरिजी ने जग-हँसाई से बचने के लिए शिशु को रूई में लपेट कर चुपचाप राजा बीसलदेव के बाग में एक पेड़ के खोखरे में रख दिया । राजा को जब शिशु की बात ज्ञात हुई तो उसने बाघ बालक को हरिजी को सौंपते हुए कहा कि राज्य की ओर से उसका लालन-पालन करें । बाघ के लड़कपन की शरारतों से तंग आकर राजा ने कालूराम ब्राह्मण को अपने बाग में बाघ के साथ रहने के लिए भेज दिया । बाघ बड़ा होता गया ।

सावन की तीज पर गाँव की लड़कियां बाग में झूला झूलने आई तो बाघ ने उनमें से उन्हीं को झूलने दिया, जिसने उसके साथ पहले फेरे खा लिये । युवा होने पर भी उन लड़कियों का विवाह नहीं हो पा रहा था । क्योंकि बाघ से फेरों की बात फैल चुकी थी; अतः 12 लड़कियों के विवाह उसके साथ ही हुए । हर एक से दो बेटे हुए जो चौबीस बगड़ावत कहलाए ।

इस प्रकार बगड़ावत चौबीस भाई थे । राजा बीसलदेव ने सोचा—ये चौबीस बांके जवान घोड़ों पर सवार होकर जब भाला संभालेंगे तो उसे राज नहीं करने देंगे, अतः उसने उन सभी की शादियाँ गूजरों में करदीं । विवाह के समय प्रत्येक भाई को एक साँड और बीस गाएँ मिली थीं । धीरे-धीरे वे अपने परिश्रम से काफी सम्पन्न और बलशाली बन गये । उन्होंने अपने-अपने नामों से अलग-अलग गाँव भी बसाए । वे गायों की देखभाल के लिए बड़ी संख्या में ग्वाले रखते थे, हाथी-घोड़े और शस्त्र भी रखते थे । राँण के राजा के साथ उनका भीषण युद्ध हुआ, जिसे 'भारत' कहा गया ।

बगड़ावतों में नींपा, सवाईभोज, तेजा तथा बाहरावत का उल्लेख अधिक आया है। भोजा सुन्दर और वीर था। एक तरह से "भारत' युद्ध से पहले वही कथा-नायक था। उसका विवाह साडू नाम की युवती से हुआ था। जबकि वह अनेक सुन्दरियों का सपना बना हुआ था। जयमती ने अपनी इच्छा से भोजा के खड्ग से फेरे लेकर उसे अपना पति माना था, पर उसकी शादी रांण के बूढ़े राजा दुर्जनलाल से कर दी गयी। इस पर जयमती भोजा के पास भाग कर पहुंच गई और बगड़ावतों ने उसे अपना लिया। बगड़ावतों ने वीरतापूर्वक रांण के राजा से युद्ध किया, किन्तु जयमती सहित सब मारे गए।

भोजा का बेटा देवनारायण मालवा में अपने मामा के यहाँ पल रहा था। किशोरावस्था में ही वहाँ से लौट कर उसने उजड़े हुए गोठां को बसाया और बचे-खुचे बगड़ावतों के लोगों और भाइयों को इकट्ठा किया। उसने रांण से पुनः युद्ध किया और अपने बाप व चाचाओं का बदला लिया।

राँण के राजा ने बगड़ावतों के पूरे कुनबे को मौत की नींद सुला दिया था। बच्चों तक को नहीं छोड़ा था। उनके गोठां को भी नष्ट कर दिया था। देवनारायण ने पुनः उसे जीवंत किया। बाहरावत के अबोध बेटे भूणां को राजा अपने साथ रांण ले गया था। उसकी एक अंगुली काट कर, अपने खून के साथ उसका खून मिला कर उसने उसके साथ बाप-बेटे का रिश्ता कायम किया था। जनमानस ने देवनारायण और भूणां को कृष्ण और लक्ष्मण का अवतार मान कर पूजा है। देवनारायण को इसलिए और भी महत्व मिला, क्योंकि वह गौ-पालक भी था। देवनारायण व पाबूजी के देवरे पूरे राजस्थान और मालवा के हजारों गाँवों में बने हुए है। इनका मुख्य स्थान सवाईभोज है, जो भीलवाड़ा जिले में आसींद के पास है। आसींद और सवाईभोज के बीच खारी नदी बहती है। पास में ही राठौला तालाब है। कहते हैं, यहीं पर बगड़ावतों का रांण के राजा से युद्ध हुआ था। राठौला तालाब का नाम भोजा की मां लखमा-दे राठौड़ के नाम पर रखा गया है।

यह चित्रकथा श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत की पुस्तक 'बगड़ावत देवनारायण महागाथा' को आधार बनाकर तैयार की गयी है।

# जयमती

बगड़ावत महागाथा में जयमती एक महत्वपूर्ण नारी पात्र है। एक तरह से वही कथा नायिका है। उसका चरित्र एक समर्पित व साहसी प्रेमिका के साथ-साथ समाज व रीति की विद्रोहिणी के रूप में भी है। उसमें साहस के साथ बुद्धिमत्ता व चातुर्य का समावेश भी है। उसने मन ही मन सवाई भोजा को अपना पति मान लिया था। वर की खोज में जाने वाले ब्राह्मणों को भी उसने समझा दिया था कि नारियल किसे देना है। ब्राह्मण वहां गए भी, किन्तु जयमती का अभाग्य कि उसकी भावना को कोई समझ नहीं पाया। बगड़ावतों ने यही सोचा कि राजकुमारी के योग्य तो राजा ही होता है। यद्यपि उस समय बगड़ावत शौर्य व धन-सम्पन्न थे, किन्तु रांण से मित्रता होने के कारण नारियल राजा के पास भेज दिया। सभी बगड़ावत बारात में भी खुशी-खुशी सज-धज कर गए।

जयमती ने फिर एक साहसिक प्रयास किया। उसने सवाई भोजा के खड्ग से ही भावर ले ली। उसने अपना संदेश, अपनी कामना बगड़ावतों तक पहुँचा दी, किन्तु उसमें भी देरी होते देखी तो उसने अपनी दासी हीरा के साथ चुपचाप महल छोड़ दिया। तत्कालीन परिस्थितियों में यह एक बहुत बड़ा कदम था। बगड़ावत कमजोर वर्ग के कृषक, ग्वाले आदि सामान्य जन थे, जबकि रांण का राजा सामंती वर्ग का सम्पन्न शासक था। यह दो विचार-धाराओं का सीधा टकराव था जो क्रमशः 'भारत' नामक युद्ध के रूप में प्रकट हुआ। शायद बगड़ावतों के मन में इस बात की खुशी और अहंकार था कि उन्होंने रानी को अपने गाँव-गोठां में रख लिया है और राण के राजा तथा उसके सहयोगी राजाओं को इस बात का मलाल था कि उनकी नाक नीची हो रही है।

भीषण युद्ध हुआ। राजपूतों तथा सामंतों की सेना प्रशिक्षित थी, साधन सम्पन्न थी, अतः बगड़ावत एक एक करके खेत रहे। यद्यपि उनका संहार

हो गया और गोठां को तहस नहस कर दिया गया; किन्तु सामान्य जनों के मन में चुभी कसक व सहानुभूति गहराती गयी। उन्हें लगता था कि उनके साथ अन्याय हुआ है। जयमती तो भोजा की ही ब्याहता थी और बूढ़े राजा की तुलना में वह भोजा के ही उपयुक्त थी; फिर जिस तरह से बगड़ावतों के साथ-साथ उनके छोटे-छोटे बच्चों को भी मार डाला गया, इससे लोगों में राजा के प्रति घृणा की भावना बलवती होती गई। अब किसी के आगे आने की जरूरत थी, और यह काम किया भोजा के ही पुत्र देवनारायण ने।

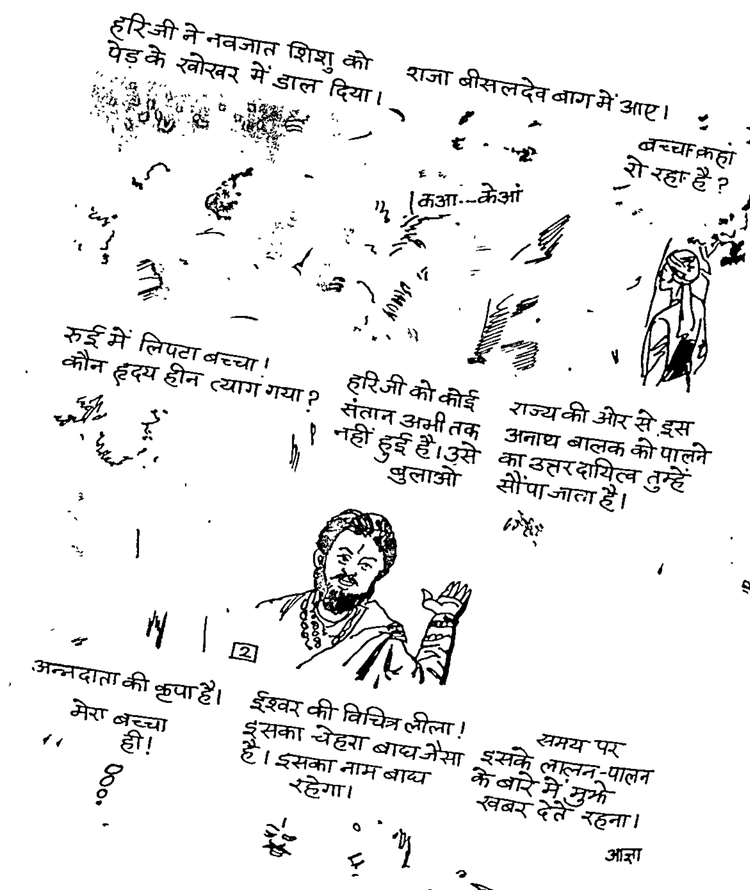
लोक मानस में गायों को माता की तरह माना जाता है। उनके पालन, संवर्द्धन व रक्षा के लिए जो भी हथियार उठाता है उसे देवता की तरह पूजा जाता है। पाबूजी को इसी गुण के कारण लोक-गाथाओं में लोक देवता के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया गया। देव नारायण किशोर थे, लेकिन उनमें मानवोचित गुणों के साथ अपने बाप-चाचाओं का बदला लेने का सकल्प भी था। एक ओर कृष्ण की तरह वे गोपालक व उद्धारक बने दूसरी ओर महाभारत के कृष्ण युद्ध में भी सीना तानकर उतरे। उन्हें विजयश्री मिली।

बगड़ावतों के समय में भी सामान्यजनों ने युद्ध में निर्बल पक्ष का साथ दिया था और देवनारायण के प्रतिशोध में तो जैसे पूरी लोकशक्ति ही उमड़ पड़ी थी। राण के राजा के साथ पहले की तरह राव-उमराव, बादशाह नहीं जुटे। उनका धर्म-पुत्र भूणा तो सही मायने में बगड़ावतों का ही बेटा था और वह भी विगत घटनाओं को जान कर देवनारायण के साथ हो गया था, अतः पासा ही पलट गया। रांण का मान मर्दन हो गया।

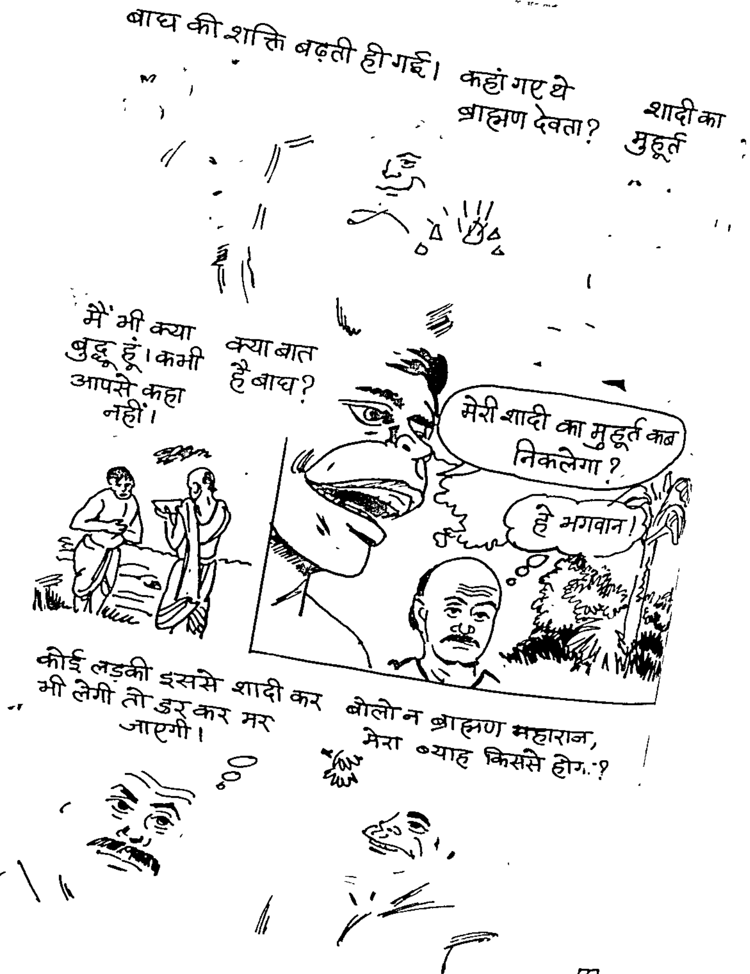
बगड़ावत महागाथा की महा सरिता में अनेक अन्तर्कथाएं आ मिली हैं। राजस्थानी लोक गाथाओं की प्रख्यात लेखिका रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत द्वारा लिखी 'बगड़ावत देवनारायण महागाथा' को उसी रूप में चित्रित करना कठिन कार्य था, एक सहज, सरल कथा को आकार देकर यहाँ प्रस्तुत किया है।

—अनन्त कुशवाहा


बगड़ावत महागाथा
आलेख- श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत
प्रस्तुति- अनंत कुशवाहा
1
लीला सेवड़ी ब्राह्मणी से हरिजी ने ब्याह किया था। पुत्र तो विचित्र जन्मा।
क्या?... सिर नाहर का, धड़ मनुष्य का!
हे चामुण्डा देवी !... इसका चेहरा तो बाघ जैसा है।
जरूर तूने गर्भावस्था में बाघ देखा होगा?
ढूंक!
अब रो-धो मत। मैं जगहंसाई से बचने के लिए इसे राजा के बाग में डाल आता हूं।
मैं राजा बीसल देव की चाकरी में हूं। मुझे भला बाग में आने से कौन रोकेगा?


हरिजी ने नवजात शिशु को पेड़ के खोखर में डाल दिया।
राजा बीसलदेव बाग में आए।
बच्चा कहां रो रहा है?
कआ--कैआं
रुई में लिपटा बच्चा! कौन हृदय हीन त्याग गया?
हरिजी को कोई संतान अभी तक नहीं हुई है। उसे बुलाओ
राज्य की ओर से इस अनाथ बालक को पालने का उत्तरदायित्व तुम्हें सौंपा जाता है।
2
अन्नदाता की कृपा है।
मेरा बच्चा ही!
ईश्वर की विचित्र लीला! इसका चेहरा बाघ जैसा है। इसका नाम बाघ रहेगा।
समय पर इसके लालन-पालन के बारे में मुझे खबर देते रहना।
आज्ञा

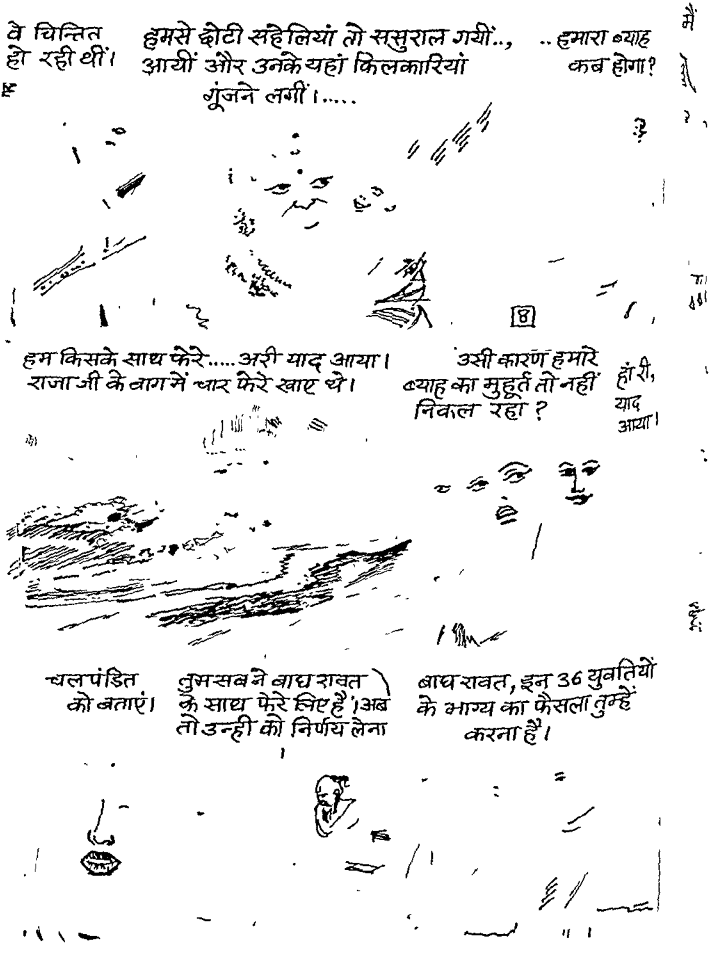

हरि जी के यहां बाघ पलने लगा।
बाघ दिन पर दिन बलशाली व शरारती होता गया।
बप्पा!
ई मां!
3
मैं बाघ के साथ नहीं खेलूंगा। ऊं..ऊं..ऊं..
हरिजी, बाघ बेटे के क्या हाल हैं?
वह बहुत शरारती है। बच्चे उसके साथ खेलने से डरते हैं।
उसे बाग में पहुंचा दो।
राजा बीसलदेव ने बाग में बाघ की देखभाल के लिए कालूराम ब्राह्मण को नियुक्त किया।
इसकी देखभाल?.... मुझे अपनी देखभाल करनी पड़ेगी।


बाघ की शक्ति बढ़ती ही गई।
कहां गए थे ब्राह्मण देवता?
शादी का मुहूर्त
मैं भी क्या बुद्धू हूं। कभी आपसे कहा नहीं।
क्या बात है बाघ?
मेरी शादी का मुहूर्त कब निकलेगा?
हे भगवान!
कोई लड़की इससे शादी कर भी लेगी तो डर कर मर जाएगी।
बोलो न ब्राह्मण महाराज, मेरा ब्याह किससे होगा?


सावन की तीज बाग में झूला डाल देंगे। जो झूलने आएगी उसी से तुम्हारा ब्याह होगा।
झूला पड़ गया।
5
सजी-धजी बालिकाएं बाग में घूमने आईं।
अहा झूला! हम तो झूलेंगी।
मैं भी! ठहर कुसुम
पहले मेरे साथ फेरा खाना होगा। फिर झूल पाओगी
फेरा क्या?

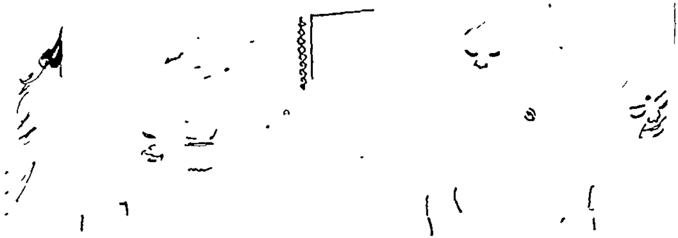

मैं नहीं जानती
अरी उसी से पूछ।
साथ इस कलश औ हरे बांस के चार चक्कर लगालो फिर....
मज़े में झूल लेना।
फेरा तो थोड़ी देर का है, झूला पूरे सावन का। फेरा खाने में क्या है। चार चक्कर ही तो लगाने हैं।
अब तुम
किशोर बाप के साथ फेरा खाकर लड़कियां झूलने लगीं।
बाबा के द्वारे पीपल है, मैं हूं। पत्ते उड़ जाएंगी, मैं कहां जाऊंगी?
बापू की गोद खेली, मां के आंचल में सोई थोड़ी सी बड़ी हुई तो घर-गांव में न समाऊंगी
उड़ जाऊंगी दूर देश... उड़ जाऊंगी!


हे भगवान! यह क्या?
आपने कहा था न जो भूलने आएगी.... मैंने चार, चार फेरे ही लिए हैं।
बावले! कितनों के साथ फेरा लगाया?
कितनी लड़कियों के साथ....
बस छत्तीस के साथ ब्राह्मण देवता।
समय की गति का क्या, उसके पंखों की आहट कहां आती है?
7
बाप्प युवा हो गया।
बाप्प के साथ फेरा खा चुकीं 36 लड़कियों को भी यौवन का वसंत स्पर्श कर गया था।


वे चिन्तित हो रही थीं।
हमसे छोटी सहेलियां तो ससुराल गयीं.., आयीं और उनके यहां किलकारियां गूंजने लगीं।.....
.. हमारा ब्याह कब होगा?
४
हम किसके साथ फेरे..... अरी याद आया। राजा जी के बाग में चार फेरे खाए थे।
उसी कारण हमारे ब्याह का मुहूर्त तो नहीं निकल रहा ?
हां री, याद आया।
चल पंडित को बताएं।
तुम सब ने बाघ रावत के साथ फेरे लिए हैं। अब तो उन्ही को निर्णय लेना
बाघ रावत, इन 36 युवतियों के भाग्य का फैसला तुम्हें करना है।


मैं इन सबका क्या करूंगा ?
मेरी बाहों के फैलाव में जितनी आजाएगी उन्हें पत्नी स्वीकार कर लूंगा।
बाहों में 12 युवतियां आईं।
9
शेष तीन फेरों के साथ बाघ रावत की शादी 12 दुल्हनों के साथ सम्पन्न हुई।
राजा बीसलदेव ने जागीर भेंट में देकर सम्मानित किया।
महाराज की जय हो।

अपनी 12 पत्नियों के साथ बाप्प रावत सुख से रहने लगे। हर पत्नी से दो दो बेटे हुए।

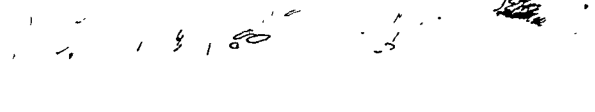


24 बेटे सुन्दर थे। बल साहस में अपने पिता की तरह थे।





बाप्प रावत के 24 बेटों में उल्लेखनीय नाम थे - भोजा, तेजा, नीया, आसा, सांगा आदि।




महाराज, बाघ रावत के बेटे तेजी से अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण होतेजा रहे हैं।
अगर वे २४ कभी मेरे विरुद्ध होगए तो.....?
सशस्त्र,अश्वारूढ बगड़ावत* मुझे राज नहीं करने देंगे....
...यदि इनका ब्याह गूजरों में कर दूं तो ये गूजरों के धन्धे में लगजाएंगे और राजधानी की बात भूलजाएंगे।
* बाघरावत का अपभ्रंश
छाछ-दही बिलोते और पशुओं को सम्हालते उनका जीवन खप जाएगा।
मैं इनके ब्याह में दहेज के तौर पर २० गाएं व एक सांड इन्हें दिलवाऊंगा।
फिर तो जल्दी ही वृद्धि हो जाएगी

राजा बीसलदेव ने गूजरों से चर्चा की।

हम बाघरावत के 24 बेटों की शादी तुम गूजरों में करना चाहते हैं।

सोचो, वीर, युवा और सम्पन्न हैं बाघ रावत के बेटे।

क्षमा करें महाराज, बाघ जी ने कई जातियों की लड़कियों से ब्याह रचाया है। हम उलझन में पड़ गए हैं।

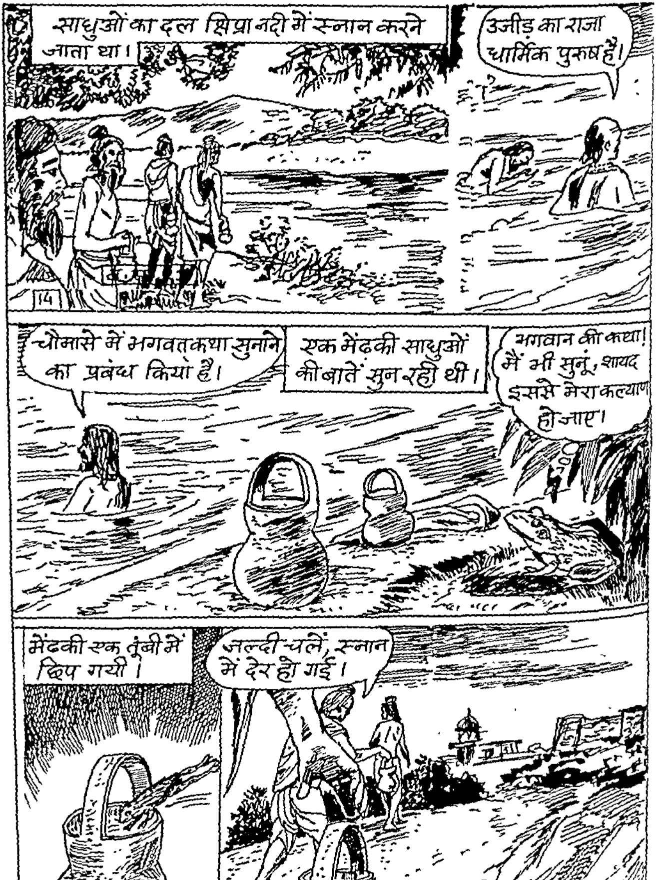
उजीण के राजा हम गूजरों के राजा हैं। वह बेटी दें तो हम भी दे देंगे।

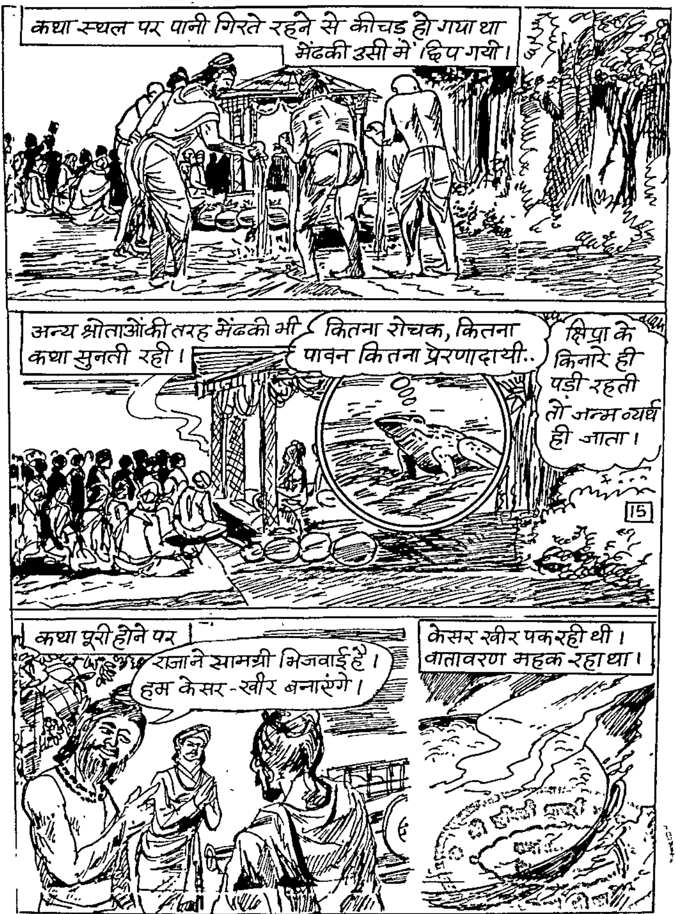
उजीण का राजा

बगड़ावतों के ब्याह का प्रस्ताव आया है। मेरी तो दो बेटियां हैं - साडू और सलूंड़। मैं का ब्याह उनमें कर दूंगा।



लेकिन क्या उन्होंने साड़ू के बारे में नहीं सुना होगा।
सुना भी हो तो कौन विश्वास करेगा राजा जी।...
कि साड़ू के जन्म की बात विचित्र है।
बगड़ावत महागाथा
साड़ू और सलूंड़
कहां तक भागोगी साड़ू बहन।
उजीण के राजा की दो बेटियां थीं - साड़ू और सलूंड़
कहते हैं साड़ू उनकी बेटी नहीं थी। उसे तो साधुओं ने भेंट किया था।
कुछ वर्ष पहले।
पकड़ लिया न!
और तेज भागो!
13
हे महात्माओं, मैं उजीण का राजा आपका स्वागत करता हूं। चौमासा भर यहीं वास कर लीजिए।
तुम्हारे जैसे श्रद्धालु की कैसे मना कर सकते हैं।
क्षिप्रा में स्नान करने का लाभ भी मिलेगा।


14
साधुओं का दल क्षिप्रा नदी में स्नान करने जाता था।
उजीड़ का राजा धार्मिक पुरुष है।
चौमासे में भगवतकथा सुनाने का प्रबंध किया है।
एक मेंढकी साधुओं की बातें सुन रही थी।
भगवान की कथा! मैं भी सुनूं, शायद इससे मेरा कल्याण हो जाए।
मेंढकी एक तूंबी में छिप गयी।
जल्दी चलें, स्नान में देर हो गई।



कथा स्थल पर पानी गिरते रहने से कीचड हो गया था मेंढकी उसी में छिप गयी।
अन्य श्रोताओंकी तरह मेंढकी भी कथा सुनती रही।
कितना रोचक, कितना पावन कितना प्रेरणादायी..
क्षिप्रा के किनारे ही पड़ी रहती तो जन्म व्यर्थ ही जाता।
15
कथा पूरी होने पर
राजा ने सामग्री भिजवाई है। हम केसर-खीर बनाएंगे।
केसर खीर पक रही थी। वातावरण महक रहा था।


अखण्डानंद, हम क्षिप्रा में नहा-धोकर आ रहे हैं। खीर का ध्यान रखना।
हूं...हां..पधारो, पधारो।
पेड़ की डाली से लिपटा विषधर सर्प खीर की सुगंध ले रहा था।
16
खीर की सुगंध से मत्त सर्प की पकड़ ढीली पड़ गई।
अरे ठहर ठहर...
हे महाकाल! वह दुष्ट तो खीर में ही गिर पड़ा।
? कैसी
कुछ गिरने की आवाज हुई थी....
मेंढकी टर्र टर्र करने लगी।


अचानक वह क्षुद्रजीव क्यों टर्राने लगी ?
टर्र टर्र
क्या बात है अखण्डानंद ?
क... कुछ नहीं, कुछ नहीं ।
खीर तो पक गई । मुझसे तो अब भूख सहन नहीं हो रही ।
बस अभी लो, देर करने से क्या ।
टर्र.. टर्र.. खीर में सांप है.. टर्र टर्र
भगाओ उस मेढकी को ! पता नहीं क्यों शोर मचा रही है ।
टर्र
टर्र
टर्र
साधु-महात्माओं की प्राण रक्षा का बस एक ही उपाय बचा है ।


अरे, अरे! उस मेंढकी को रोको!
स.. सत्यानाश! वह गर्म खीर में कूद गयी!
सारी खीर बेकार हो गयी। कड़ाह उलट दो।
गुरुजी, आश्चर्य! कड़ाह के तल में सर्प मरा था।
लगता मेंढकी टर्र· करके हमें सावधान कर रही थी।
उसने हमें बचाने के लिए अपनी प्राणाहुति दे दी। बेचारी क्षुद्रजीव पर महान आत्मा।
हमें बचाने के लिए मेंढकी ने अपना प्राणोत्सर्ग कर दिया...


...हम उसे जीवित करेंगे। एक सुन्दर युवती के रूप में।
अपने पुण्य, सदइच्छाओं और कठोर साधना का स्मरण करते हुए मेंढकी के मृत शरीर पर ध्यान केन्द्रित करो। एक सर्वांग सुन्दरी रमणी के रूप की कल्पना करो।
महात्माओं के मस्तिष्क से निकली प्रभा की धूमिल रेखा मेंढकी पर घनीभूत हो रही थी।
आकार ले रही थी
एक नारी आकृति उभर रही थी।


हम तपस्वियों की मानस-पुत्री में तुम्हारा नाम साड़ू रखता हूं।
राजन, हम तो निर्लिप्त बहता पानी हैं.... साड़ू को...
अपनी बेटी सलूंड़ की तरह ही पुत्री का पद दीजिए।
आओ बेटी साड़ू।
आपका आदेश मेरे लिये नई खुशी है महात्मन्।
साड़ू, लोग कहते हैं तू मेंढकी थी लेकिन तेरे शरीर से तो मोगरे की सुगंध आती है।
20
सलूंड़, मेरी बहना.... तेरे साथ रह कर मैं भी सुरभित हो गई हूं।
अरी, तुम दोनों बहनें यहां कुलेल कर रही हो...


...राजाजी ने तुम्हारा ब्याह तय कर दिया है।
चिन्ता मत करो। एक ही घर में जा रही हो। तुम्हारे दूल्हे, सगे भाई हैं।
बाघ रावत के बेटे सवाई भोज से साडू का ब्याह हुआ और...
...बाह रावत से सलूंड़ का।
सुबुक सुबुक
21
अन्य भाइयों के ब्याह भी मालवा में हो गए।
देखो दहेज में क्या मिलता है।



प्रत्येक बगड़ावत दूल्हे को दहेज में २० गायें व एक सांड मिले।
नीया भाई, हम इतनी गायों का क्या करेंगे?
यह पशुधन है भोजा। अब हमें इन्हें ही संभालना होगा।
बगड़ावतों ने झोपड़ियां बनाईं और गायों की देखभाल में जुट गए।
इतने दूध का क्या करेंगे?
हम अपने हथियार पेड़ों पर टांग कर गायों की रस्सियां पकड़ें?
क्यों नहीं। हल सम्हालने वाले हाथों में कभी कभी तलवारें नहीं कौंधती?
पहले जी भर कर पीयेंगे।
22


बगड़ावत महागाथा
सोने का पुतला
बगड़ावत सब भूल कर गाय-बछड़ों की देखभाल में लग गए।
पहले तो ग्वालों जैसा जीवन बिताना मैंने कठिन समझा था
नींया भाई, उस गाय को देखो। वह अपनी नहीं है। सुबह हमारे झुण्ड के साथ मिल जाती है और शाम को वापस चल देती है।
23
नींयां भाई, बहुत दिन होगए उस गाय को चराते....
आप पशुओं को ठांण पर ले चलो। मैं उसके पीछे जाता हूं। देखें किसकी है?


सवाई भोज गाय का पीछा करता रहा।
गाय का स्वामी तो मिल गया। गृहस्थ महात्मा ....
आगई मेरी कामधेनु। अब दूध दुह लूं।
हमने बहुत दिनों तक इस गाय को चराया है। पहले गुवाली तो दे दो।
गुवाली लेने आए हो?
हां, लेकर ही जाऊंगा।
भोले युवक..
मैं जो कुछ गुवाली दूंगा वह किसमें ले जाओगे?
इस फक्कड़ के पास होगा भी क्या?
24



इस वस्त्र में दे दीजिए।
महात्मा ने दो मुट्ठी जौ डाल दिया।
जाओ कल्याण हो।
धत तेरे की!
उस तेजस्वी गृहस्थ महात्मा ने दिया भी तो क्या, दो मुट्ठी जौ!
उनके सामने तो फेंक नहीं सका, अब फेंक देता हूं। अच्छा गुवाली लेने गया।
तुम्हें गुवाली मिली?
अरे साड़ू; हः हः ...बताता हूं मैं कितना मूर्ख बना।
इस कमरबंध में दो मुट्ठी जौ डाल दिया था। मैं फेंक आया।
25



जौ ?.... क्या चमक रहे हैं!
तो इसमें अनमोल रत्न! हे भगवान!
वे जरूर शंकर-पार्वती होंगे तुम फिर से जाओ। उनसे क्षमा मांगना और फेंके हुए रत्न चुन लाना।
सवाई भोज फिर गया।
मैंने जौ कहां गिराये थे, पता नहीं चलता।
शायद चींटियां ढो ले गयीं।
इधर तो उजाड़ खण्ड है।
साड़ू गृहस्थ-महात्मा को शिव पार्वती बता रही थी उन्हें खोजूं।



मानव खोपड़ियां
किसे खोज रहा है बालक ?
गृहस्थ महात्मा को ! पति-पत्नी थे, एक गाय थी।
मैंने देखा था। वे शायद शिव-पार्वती थे।
शिव-पार्वती यहां ? अच्छा बावला फंसा है।
ओह ! हमारे गुरूजी ?... वे तो अन्तर्ध्यान होगए पर....
...मैं महातांत्रिक उन्हें यहां फिर से प्रकट करा सकता हूं।
इस कड़ाह के नीचे तुम आग धधकाओ। मैं कुछ जड़ी-बूटियां इकट्ठी करता हूं।


तेल से धुआं उठाउंगा उसी में से गुरुजी प्रकट होंगे।
जो आज्ञा महात्माजी।
हा:। खौलते तेल में तुझे ही तलूंगा मूर्ख!
28
मंत्र बद्ध तेल को कड़ाह को मानव शरीर चहिए हा: हा:....
...उस गंवार का शरीर।
तेल खौलने लगा।
मैं ये दुर्लभ जड़ी-बूटियां इसमें डालता हूं।
अब आओ इस कड़ाह की परिक्रमा करें।
तुम आगे रहो मैं पीछे चलूंगा।
अचानक महातांत्रिक ने धक्का दिया।



भोजा का युवा कसरती शरीर गुलाटी खाकर बच गया।
मैं तो कड़ाह में गिर ही जाता!
अफसोस, मेरा हाथ बहक गया।
आज पहली बार कोई शिकार मुझ से बचा है।
मुझे इस महात्मा की नीयत ठीक नहीं लगती।
अब आप आगे चलिए, मैं पीछे रहूंगा।
इसे सन्देह होगया है। मैं जल्दी करूं।
हां, हां जरूर।
आगे रह कर भी मैं एक झटके से इसे कड़ाह में डाल दूंगा।
29
महातांत्रिक झपटा पर भोजा सतर्क था।
तू महात्मा नहीं, कोई दुष्ट है!
मुझे खौलते तेल में जाने की इच्छा नहीं है...
...आप ही पधारो!
ईक!



कड़ाह के ऊपर कुछ देर के लिए जैसे धुआं, प्रकाश और चीख का खेल होता रहा...
आयग्ग!
ईह!
...फिर शांति छागयी
उफ!
सवाई भोज ने कड़ाह में देखा।
यह क्या चमत्कार! वह दुष्ट महात्मा सोने के पुतले में बदल गया।
भाइयों को बताना होगा।
30
मुझे तो अब भी विश्वास नहीं होता भोजा कि वह तांत्रिक सोने में बदल गया।
चल तो रहे ही हैं, देख लेना।
ठोस सोने का यह पुतला! हमारे तो दिन फिर गए भोजा!


गुफाओं से हमें ये रत्नाभूषण मिले हैं।
उन अभागों के होंगे जिनकी खोपड़ियां गड्ढे में पड़ी हैं।
सब वस्तुएं बैलगाड़ी पर रख कर ले चलें।
31
रत्न-गहने, सोना पाकर बगड़ावत जैसे बावले होगए।
हम नए गांव बसायेंगे।
ढेर सा धान खरीद लें
धन जमीन में गाड़ दें कुसमय में काम आएगा।
और गाएं खरीद कर पशुधन बढ़ाएं
कुछ और सोचें
विशाल मंदिर बनवाएं। बगड़ावतों का नाम होगा।
बगड़ावत महागाथा
सांप से मित्रता
अकूत धन कैसे व्यय करें इस पर विचार हो रहा था।


नीयां की राय थी।
मेरी बात सुनो, सोने को काट कर गहने बनवाएं। पातू कलाली के यहां छक कर मदिरा-पान करें और...
...गढपति राजा रांण से मित्रता करें।
यही ठीक रहेगा।
राजा का वरद हस्त रहेगा तो हमारी माया बची रहेगी।
राजा रांण से हम बराबरी की हैसियत से मिलेंगे
हमारे पास हाथी-घोड़े, सम्पूर्ण हथियार और रत्नाभूषण होने चाहिए।
पहले घोड़े पसंद कर लें।
बगड़ावतों ने घोड़े खरीदे और उनके नाम रखे।


मोजा की घोड़ी थी बूंली। नींयाजी के घोड़े का नाम था नौलखा, तेजा रावत का कालियांण आदि।
एक हाथी लिया।
इसका नाम जयमंगला रहेगा।
हाथी-घोड़ों की सजावट के साथ बगड़ावतों ने अपने स्वरूप भी बदले।
हमारे पिता बाघ रावत तो बदनोर बसा कर वहीं जम गए नहीं तो वे भी हमारे साथ होते।
33
उन्हें आराम करने दो। हमीं घोड़ों की टापों से जमीन खूंदते चलेंगे।
उत्साहित, उमंगित बगड़ावतों का दल रांण राज्य की सीमा पर पहुंचा।


राजा का बाग है। इसी में डेरा लगायेंगे।
दरवाजा खोलो, हम बदनोर के बगड़ावत हैं।
महाराज जी के दरबार से हुकुम लाइए।
34
दरबार से हुकुम लाने तक कौन प्रतीक्षा करेगा।
जय मंगला हाथी को लाओ।
रांण के राजा से मित्रता करनी है तो उन्हें बराबरी का अहसास कराएं।
ओहो! बाग तो शानदार है।
बापरे! फाटक ही तोड डाला।



बगड़ावतों ने बाग में डेरा जमाया।
बागबान रांण के दरबार में शिकायत करने पहुंचे।
किसने बाग में निडरता से डेरा लगाया है?
नीमदे, तुम जाकर देखो।
जो हुकुम
रांण के राजा दुर्जनसाल का अनुज नीमदे बगड़ावतों के पास चला।
35
जंगली शूकर!... उसे मारते चलें।
पासा उल्टा पड़ा।
आज तो दाढ़ाला मुझे चीर देगा।


मौत की रफ्तार बीच में ही टूट गयी
वाह शूरवीर! कौन हो?
भाले के एक वार से शूकर मार दिया।
रांण के तो नहीं हो। वीरता कहीं छिपती है।
बाप रावत का पुत्र नींया हूं।
हम बगड़ावतों का डेरा राजा के बाग में है।
इनके साथ तो मित्रता ही ठीक है।
इन बांके जवानों से भाईचारा करना ही ठीक है।
आप चौहान हो, हम पड़िहार, हमारी निभ जाएगी। आप लोग रांण के मेहमान हैं।
बगड़ावतों के बीच
माला बदल भाई बनाना चाहते हैं।
राण के राजा ने मेहमानी की वस्तुएं भिजवाई हैं... हम क्या करें?
36


दारू का न्योता दें।
दारू मंगवाएं नीयाजी?
जाता हूं।
पातू कलाली के चौक के ठाट-बाट ही निराले थे।
किसी की परवाह ही नहीं।
वह सजीला जा रहा है।
जाने दे। पास आने से पीतल लगने लगेगा।
नीयाजी वापस आगए।
भोजा के ही वश की बात है।
भोजा तू ही जा। मुझे तो पातू कलाली पूछी ही नहीं।
भैया, तुम अपना रूप ही दिखाते रहे होगे।
रूप पर तो महलों की पद्मिनियां रीझती हैं....



.. कलाली तो धन पर रीझेगी।
सवाई भोज बूंली घोड़ी पर सवार हो कर चले।
पातू से कहो मीठा-मतवाला सवाई भोज मद मोल लेने आया है।
मैं हूं पातू कलाली। गांठ में धन भी है सिरदार?
तेरा सारा नशा खरीदने के लिए मेरी घोड़ी के गले की सांकल ही बहुत है।
अभी पता चलजाएगा।
34
पातू कलाली ने जौहरी को सांकल दिखाया।
बावली, तेरी सात पीढ़ियां तक बैठ कर खाएं, यह इतना मूल्यवान है।
जिसकी घोड़ी के सांकल का यह हाल है, वह पूरे रांण को खरीद सकता है।


मुझे क्षमा कर दो वीरा।
39
मैं आपकी बहन हूं। जितनी दारू चाहिए दूंगी।
दारू की मतवाल में जैसे बगड़ावत और पड़िहार डूब गए।
इन मतवाले बगड़ावतों को तो देखनीमदे। मेरी चमक फीकी पड़ गयी।
जब तक इनमें चार है, ये चमकेंगे राजाजी।


रांण के गढ की ऊंचाई बढ़ने पर ये खुद तले में आजाएंगे।
मैं प्रतीक्षा करूंगा।
बगड़ावत महागाथा
धनमद-रूपमद
दूध-घी से भरा-पूरा घर, चट्टानों को भी निचोड़ सकने वाला यौवन और आकाश छूती उमंगों के धनी...
गोरी देश बेगाना, मुंह मत फेर चल...
बगड़ावतों की समृद्धि दिन दूनी बढ़ रही थी।
सोना खेले आंगन, रूपा डार पर....
40
रावत भोज, बिजौरी कंजरी खेल दिखाने आई है।
हम जरूर देखेंगे।
बड़ा नाम सुन कर आई हूं राजा....



सुना है आप कलावंतों को मुंह मांगा पुरस्कार देते हैं।
अपनी उत्कृष्ट कला दिखा बिजौरी, तुम्हें गहनों से तौल दूंगा।
51
बजा रे ढोलकिए!
चपल सौन्दर्य पर वान चढ़ गया।
हे राजा, मैंने तो तेरे दिए फूल गंवा दिए... आंचल के कोर बांधा था पवन उड़ा ले गयी.... गंध छोड़ गयी
..मेरी देह महकने लगी ...सच्ची! सारी देह महकने लगी...
लेकिन तेरे पगतल दोनों आंखें रख आई हूं..... अब ऊपर देखने को क्या है?
तन एक बांसुरी ही तो है.. निर्जीव.. जड़.. तुम्हारे होठों से लगी तो फूकने लगी। रंध्र रंध्र से सुर फूटने लगे। रख दोगे तो फिर जड़ हो जाएगी।



ढोलक और गीतों के बोल हवा बांट देती हैं ....
रह जाती है मन से ओठों तक आई बात।
उसे कहते तो मैं मर जाऊंगी किसना!
बिजौरी कंजरी ने लोगों को मुग्ध कर दिया।
नटी का ऐसा खेल न देखा, न सुना।
बिजौरी, तू अपना खेल दिखाने कहां-कहां जाती है?
उन सभी जगहों पर जहां धरती पर प्यार और आकाश असीम होता है।
बिजौरी, तुमने बगड़ावतों को अपना खेल दिखाया...


मैं सवाई भोज, तेरे आधे अंग पर आभूषण सजा देता हूं।
देखें इस जोड़ के आभूषण तुझे और कौन पहनाता है।
निराश लौटेगी तो पूरे अंग सजा दूंगा।
तूने सुना ? बगडावतों के रावत भोजने बिजौरी कंजरी के आधे अंगों को मूल्यवान गहनों से सजा दिया।
उन्हें धन का घमण्ड होगया है री।
धन का ही नहीं रूप का भी।
43
रावत भोज साक्षात ईसर है।
रावत भोज (सवाई भोज) का सपना कितनी ही चीता-लंकी युवतियों की आंखों में उभरने लगा था।
वह ब्याहता है। साडू का श्रृंगार है।


रहे, उसके नाम से मैं भी चूड़ला पहन लेती।
वह राजा है। कितनी ही रोझों का धणी हो सकता है।
नर आ तू!
55
बिजोरी कंजरी गांव-गांव, देश-देश खेल दिखाती घूम रही थी।
मैं आधा बसंत, आधा सावन लिए घूम रही हूं... ऐसी ऋतु किसी ने नहीं देखी होगी..... खम्मा घणी, आपका आकाश बहुत छोटा है।
कंगन का जोड़ा, पायल के साथ की पायल तो मिल जाएगी... लेकिन तेरा जोड़ नहीं मिलेगा। तेरे जोड़ की तो मैं ही हूं कांता।
मैं बहुत ऊंचे ..बहुत ऊंचे से भीड़ को देखती हूं। लेकिन उनमें तू नहीं होता। इससे ऊंचे तो स्वर्ग है... क्या हम वहीं मिलेंगे प्राण?
अलगोजे की एक बांसुरी से ही रागिनियां गूंजती हैं... मेरा भी एकांग ही चपल-चंचल है।
तन तो सांकल से बांध दूं मन ही मुक्त पंछी है.....


बगड़ावत महागाथा
जयमती
बिजोरी, सवाई भोज का नाम लेकर खेल दिखाती भटकती फिरी पर उसका आधा अंग आभूषण- विहीन ही रहा।
कृपणता कलावंतों को पुरस्कृत करने में ही झलकती है।
सवाई भोज की चर्चा फैलती जा रही थी।
हीरा, बिना दिखे कोई कैसे मन हर लेता है?
बूंवाल में राजा ईड़दे सोलंकी की राजकुमारी जयमती और हीरा दासी।
हीरा, मैंने मन ही मन अपना वर...
बहरिये राजकुमारी जी। राजा जी ब्राह्मणों को आपका टीका और नारियल लेकर वर खोजने भेज रहे हैं।
45


उन ब्राह्मणों को बुलाना हीरा।
हम तुम्हारे लिए वर खोजने जा रहे हैं राजकुमारी जयमती। कुछ कहना है?
राजकुमारीजी जो कहें ध्यान से सुनियेगा और अपने तक ही रखियेगा।
एक पिता के 24 बेटे हैं उनमें बूंली घोड़ी के सवार को खोजना।
दोनों ब्राह्मण बदनोर आए।
सवाई भोजजी, हमारी राजकुमारी जयमती का टीका-नारियल आप के लिए है।
ब्राह्मण का आशीर्वाद
राजकुमारियों के ब्याह तो राजघरानों में ही होने चाहिए। आप रांण के राजा के दरबार में पधारें
यही ठीक रहेगा।


हम आप को ही दे जाते हैं। पहले ही भटकते-भटकते हमारा कचूमर निकल चुका है।
आशीर्वाद
हमने राजकुमारी जयमती का टीका-नारियल सवाई भोज के हाथ में दे दिया।
हां, हमारा फर्ज पूरा हुआ।
नींया रावत रांण के राजा से मिले।
राजकुमारी जयमती का टीका-नारियल आप स्वीकार कर लीजिए।
मैं?... इस उम्र में?
क्या हंसी उड़ा रहे हो!
५१
दरबार, गढ़ बूंवाल के राजा ईड़देजी सोलंकी ने टीका नारियल आपके लिए ही भेजा है।
नहीं नींया भाई....


सारा प्रबंध हम करेंगे। आप तो बस राजी हो जाइए।
अच्छा, जैसी तुम लोगों की मरजी।
हल्दी लगे फिटकरी.. जब मुझे कुछ व्यय नहीं करना है तो हर्ज क्या!
48
बारात सज रही थी।
बगड़ावत बांके जवान साथ जाएंगे तो मुझे तो सब दूल्हे का बाप ही समझेंगे।
वे तो सब दूल्हों की तरह ही सजे-धजे लगते हैं।
नीयाजी, आप अपने भाइयों के साथ चार कोस आगे ही चलो। मैं पीछे आऊंगा।
जैसी दरबार की मर्जी।



बगड़ावत सजीले सवार बूंवाल पहुंचे।
बारात आगई, बारात आगई।
अरी, इनमें दूल्हा कौन है?
कौन ज्यादा सजा है?
मुझे तो सब दूल्हा लगते हैं।
हीरा दासी ने देखा।
मेरी बाई सा का बींद इन्हीं में है।
इस कलश में कुछ डालने की रीति है सलोने सिरदार।
यही दूल्हा होगा।
कलश बधावे की रीति।
सवाई भोज ने खन-खन स्वर्ण मुद्राएं डाल दी।
अरी हीरा, सुनते हैं ये तो बगड़ावत वीर हैं। दूल्हा तो पीछे हाथी पर आ रहा है।


दूल्हे को देख हीरा का दिल बैठ गया।
यह बूढ़ा?
मेरी स्वामिनी तो रूप में पद्मिनी और युवा हैं। पति के रूप में यह बूढ़ा राजा
रांण का राजा दुर्जन साल (दूल्हा) तोरण नहीं मार सका।
मैं ... मेरा शरीर धूज रहा है।
भोजा, दूल्हा राजा तोरण नहीं मार सका तो बारात की हेठी होगी।
50
सवाई भोज के इशारे पर बुली घोड़ी उछली।
सभी सन्न रह गए।
सवाई भोज ने तोरण क्यों मारा?
गलती किया।
ये जरूर लड़ मरेंगे।


भागो, भागो,
मुहूर्त बीत रहा था। राजा से तो तलवार ही नहीं उठी।
पड़िहारों की कलाई में ताकत ही नहीं।
ताकत देखनी है तो हथियार संभाल
हीरा गिरती-पड़ती जयमती के पास पहुंची।
बाईसा!
आप का बींद रांण का राजा दुर्जनसाल है। लेकिन..
..कलश बधावे की रीति बगड़ावत वीर सवाई भोज ने निभाई।
उन्होंने ही तोरण मारा। बारात में तलवारें खिंच गयी हैं।... आप मुस्करा रही हैं!
बगड़ावत और पड़िहार दोनों क्रुद्ध हैं।


तू डरपोक है हीरा। जा सवाई भोज की तलवार मांगला।
हीरा, तेरी स्वामिनी जयमती ने तलवार क्यों मंगाई है ?
दुल्हनको तलवार से
उन्होंने मुझे बताया तो नहीं लेकिन
शूरवीर की तलवार से वार-फेर करने पर आने वाले दिनों में कोई संकट नहीं होगा।
इस पर मेहंदी-कुंकुम के दाग मत लगने देना।
इनके दाग लगने पर ही तलवार बीजलसार हो जाती है,....लेकिन ध्यान रखूंगी।
रक्त के छींटे ही ठीक हैं।
बाईसा, आ आप इससे फेरा लेंगी ?


हां हीरा, अग्नि की प्रदक्षिणा करके इस खंग के स्वामी को मन से अपना पति मानती हूं।
क्षत्राणियों के विवाह ऐसे भी होते हैं।
53
बुंवाल में और रक्तपात न हो इसलिए अब जिससे चाहे मेरा ब्याह कर दिया जाए।
मन तो जिसका होना था हो चुका। तन की डोली का क्या....
बगड़ावतों, पड़िहारों का रोष दब गया था। जयमती के साथ राजा दुर्जन साल का विवाह हो गया।
अपमान का घूंट पीना पड़ा है।
यह कड़वा घूंट भूलेगा नहीं।


हीरा, तू तो मेरे साथ चल रही है मैं बगड़ावतों में जाऊं, या रांण के गढ़ में?
मैं तो गताघम में पड़ गयी हूं बाईसा।
बारात लौट चली।
जीयां जी, मुझे बगड़ावतों में ले चलो।
क्या कहती हैं भाभी सा, आप रांण की महारानी हैं।
मैं तो तोरण मारने वाले की बीन्दनी हूं।
मेरी डोली गोठां की बजाय गढ़ में जारही है। क्या यह उचित है जेठ जी?
वचन देता हूं, एक दिन हम आपको बगड़ावतों में ले आएंगे।


जयमती उपवन के महल में रुक गयी।
राजाजी मेरे लिए नया महल बनवाएंगे तभी जाऊंगी। कुछ दिन ऐसे ही निकल जाएंगे। बगड़ावतों ने भरोसा दिया है।
बगड़ावतों को राजा के कोप का भय नहीं है?
सेना से टकराना हंसी खेल है? फिर...
वे तो घर छोड़ या ठाकुर हैं। डूंगर में गाएं चराते फिरते हैं। जाने कब आएंगे...
इधर राजाजी कांसा जीमने आ जाएंगे।
उन्हें रोकने का उपाय कर हीरा!
55
बगड़ावत तैयारी कर रहे थे।
रांण से खाट हो चुकी है। इस धरती पर खांड़ा बजेगा। घोड़े और कमर कस लो।
सवाई भोज की पत्नी साडू चिन्तित थी।
हे भगवान


साड़ू ने सवाई भोज को बहुत समझाया।
खारी नदी में पानी की जगह रक्त बहेगा।
जिसे लाना चाहते हो वह 24 भाइयों का काल है।
56
मैं तो सौत को सह लूंगी लेकिन अपनी बेटी दीपकंवर और पुत्र देवनारायण के लिए क्या सौतेली मां लाओगे?
जयमती मेरे खंग की ब्याहता है। उसके लिए केवल खंग ही तो उठाया है साड़ू।
खंग के पीछे रक्त की लकीर होती है जो नदी बन जाती है। उसमें सब बह जाता है, सब डूब जाता है।
मुझे अनिष्ट की आशंका हो रही है।


बगड़ावतों ने रांण के नौलखा बाग में डेरा डाला।
अपने हथियारों की चमक फीकी न पड़ने दो लेकिन राज से सीधे नहीं उलझना है।
हम रांण के गढ की ईंट से ईंट बजा देंगें।
57
बाई सा, बगड़ावत बाग में प्रतीक्षा कर रहे हैं, राजा महल में ....। सीढ़ियां कौन चढेगा?
कोई नहीं। मैं ही नीचे उतरूंगी हीरा।
रांण का राजा दुर्जनसाल चिन्तित था।
नीमदे, नई रानी जयमती बीमारी का बहाना किए बुलावा टाल रही है.....
बगड़ावत बाग में डेरा डाले पड़े हैं। मुझे शिकार पर जाना है।


आप चिन्ता न करें। मैं महारानी के महल का पहरा कड़ा कर देता हूं।
नई महारानी की तबीयत ठीक होने की खुशी में उनकी ओर से लड्डू बांट रही हूं।
58
हीरा, तेरी स्वामिनी तो हम पहरेदारों को भी याद रखती हैं।
बाई सा, इस तरह हम भाग कर बगड़ावतों से मिलेंगी और उन्होंने शरण नहीं दिया तो?
हीरा, मैं इस कटार से एक इतिहास लिख जाउंगी।


वे दो स्त्रियां!
जाने दो। हमें तो महल की ओर जाने वालों को रोकना है।
हम बच गयीं बाईसा। यह बगड़ावतों का डेरा है।
159
ठहरो! तुम दोनो कौन हो?
नींया जी से कहो उनकी भाभी महल छोड़ कर गोठां में रहने आई है।
रानी जयमती! .... तो अब रांण का पत्थर; पत्थर बैरी हो ही गया।
भालों की नसेनी पर जयमती को महल से उतारते तो बात थी।



हम अब तक साहूकार थे अब रांण के चोर कहलाएंगे।
ठडेरे छोड़ो! हमें जल्दी यहां से कूच करना है।
जयमाती - भोज का सामना हुआ।
निमंत्रण पाकर आई हूं। मुझे त्याग मत देना।
बाहों में आई, सिर देता हूं।
सवाई भोज जयमती के साथ बूंली घोड़ी पर सवार हुए और हीरा दासी नीयां जी के साथ नौलखे घोड़े पर बैठी।
बगड़ावतों का डेरा उखड़ गया।
60
गोठां में बगड़ावतों से पहले समाचार पहुंच गया था। घर घर घी के दीए
रानीजी, मैं आपके सेज की सम-भागिनी आपका स्वागत करती हूं।



जीजी, क्यों लज्जित करती हो। मैं परायों में थी, अब अपनों में आगयी हूं।
रांणका राजा शिकार से लौटा।
तुम लोगों के चेहरे उतरे हुए क्यों हैं?
हूं....बगड़ावतों की यह जुर्रत कि जयमती का अपहरण कर के ले गए और नींमदे पहरा देते रहे।
मैं ब्याह करने को तैयार नहीं था उन्होंने उकसा कर मेरा अपमान कराया और....
61
...अब रांण की इज्जत चुरा कर ले गए!
उनकी गोतं धूल में मिला दो!
बगड़ावत महागाथा
भारत
बगड़ावतों का कोई नाम लेवा न रहे!


ले बगड़ावतों से ती।
हमें औरों से भी सैनिक सहायता लेनी होगी।
62
भारत की तैयारी के लिए रांण से कागज भेजे गए।
सांवर से दीयो जी...
सरवाड़ से कालूमीर...
भारवरोड़ से चंदर सिंह...
मालवा से राजा बीरम...
...आदि... राजपूत सैनिकों के साथ रांण पहुंच गए।
बगड़ावत भी चुप नहीं बैठे थे।
हमारे परवानों का उत्तर आया?


रूपायली से हमारे गुरु बाबा रूपनाथ का सन्देशा है कि रानी को ले आए तो ठीक है पर....
...वापस करोगे तो तुम्हारा नाम ही मिट जाएगा।
सुना है रांण में फौजें जमा हो रही हैं।
हमारा सामना होगा तो दूध की तरह फट जाएंगी।
रांण के हित-मित्रों की सेनाएं खारी नदी के किनारे जमा हो रही हैं।
हमारे भी मीठे-मतवाले भेला हो रहे हैं।
गजब होने जा रहा है। चौहानों व पड़िहारों के बीच भारत ठन गया है।
इनका झगड़ा बातचीत से सुलझ जाए तो ठीक है।
अजमेर नरेश
अजमेर के राजा बीसल देव की अगुवानी में एक दल समझौता करने बगड़ावतों के पास गया।


परिणीता रानी को वापस कर दो।
किसकी परिणीता ? खंग से व्याह पहले हुआ फिर जयमती स्वेच्छा से आई।
रांण के रनिवास में रानियों की कमी है जो बूढ़े राजा को जयमती ही चाहिए?
न आपलोग मान रहे हैं, न रांण के राजपूत। वैर की यह आग कैसे बुझेगी?
अब तो मर कर या मार कर ही बुझेगी।
भारत शुरु होने वाला है। देखें भवानी अपने मुण्डमाल के लिए हम भाइयों में से किसे पहले चुनती है।
जयमती- भोजा
इकठ्ठे मत लड़ना शत्रु की सेनाएं भी बिखर जाएंगी।
बगड़ावतों के साथ नागा, नाथ-पंथी साधुओं के दल, किसान, पशुपालक, राजपूत आदि अप्रशिक्षित जुझारु लोगों की भीड़ थी तो....


...रांण के आह्वान पर छोटे-मोटे राजाओं, बादशाह-नवाबों, भीलों आदि की सेनाएं थीं। इनमें अवसरवादी लेकिन प्रशिक्षित सैनिक थे।
राजस्थान का एक वृहद् क्षेत्र संघर्ष के कुप्रभाव में आगया था।
रांण के पक्षधर दीयोजी और कालूमीर ने रूपायली पर हल्ला बोला।
रूपनाथ के जोगी, नागाओं और खूंख्वार कुत्तों ने हमला बिफल कर दिया।
65
कहने को रूपनाथ जोगी है। इसके पास तो राजाओं की तरह लड़ाकू वीर हैं।
अभी तो भागो।
बगड़ावत अलग-अलग सैन्य टुकड़ियों के साथ फैले हैं। हम कहां लोहालें?


उनके बाप बाघरावत को बदनोर में घेरो। बाप को बचाने को सब एकजुट होंगे ही।
बगड़ावतों का छोटा भाई ईड़दे रांण परजा चढ़ा।
लूटो और भागो। पातु कलाली का घर छोड़ दो।
बदनोर में रक्त पिपासिनी तलवारें चमक रही थीं।
बगड़ावतों के पिता बाघरावत मारे गए।
पिताजी!
हे भवानी...
२५ भाइयों ने अपना-अपना खेड़ा सम्भाला। युद्ध की लपटें फैल गई थीं।
हम अपना-अपना धन लेकर कहां कहां भागते फिरें!
फौजें बिखर कर लड़ रही थीं। कौन कहां लड़ रहा है, कहां भारत हुआ, कौन खेत होगया? कुछ पता ही नहीं चलता था।


बूंदी का चतरा हाड़ा पूंगल से विवाह कर लौट रहा था।
ठाकुर, आगे भारत हो रहा है हम दूसरे रास्ते से चलें।
मेरे पास घोड़ी और हाथ में तलवार है। मैं भारत देख कर आता हूं।
नहीं दूल्हे राजा!
मैं बूंदी का चतरा हाड़ा भारत देखने आया...
घोड़ी की पीठ खाली हो गयी।
आह!
अकारण जोश में ऐसे कितनों ने ही अपनी जानें गवांदी।
मूर्ख
बादशाह तलावत खां
राजा दुर्जनसाल, आपने वादा किया था कि भोजा की लड़की रूपकुंवर को मेरे सुपुर्द कराओगे।
मैंने मदद इसी शर्त पर किया है।
हां चलो उसकी ससुराल नायला से उसे दिला दें।



नायला में रूप कुंवर
यहां के अधिकांश योद्धा रणभूमि में बगड़ावतों के साथ हैं।
हम स्त्रियां रांण और यवनों का मुकाबला करेंगी।
68
वीरवेश में रूपकुंवर ने दुर्जनसाल पर भाला उठाया।
वहकहां है जिससे तुम मेरा निकाह कराने लाए हो?
मैं..मैं तुम्हारे बापका धर्म भाई रहा हूं क्या तुम मुझे मारोगी?
रूपकुंवर ने रांण के राजा को छोड़ दिया लेकिन...
...स्वय युद्धाग्नि मे होम होगई।


बगड़ावतों के एक एक खेड़े का सफाया करते चलो। औरतें-बच्चे किसी को जीवित न छोड़ो।
शत्रु पक्ष के कई सूरमाओं का संहार करने के बावजूद सीमित साधनों के कारण बगड़ावतों के एक एक भाई व उनके किशोर कुंवर रण में काम आते रहे।
तेजा रावत भागकर बाबा बन गया।
नेवा और सवाई भोज चिन्तित थे।
अब तक तो रानी जयमती मीठी लगती थी, अब कड़वा नीम लगती है।
युद्ध में उतरने के सिवा कोई चारा नहीं। अपने किशोर कुंवरों की सुरक्षा का प्रबंध करें।
छोछू भाट को जिम्मेदारी सौंपी है।



भोज का बेटा मेंहदू
हम तुम्हें सुरक्षा की दृष्टि से अजमेर के कामदार गोरवाल के पास भेज रहे हैं
हमारा कोई तय नहीं... बचेंगे या वीर गति को प्राप्त होंगे।
निजोरी कंजरी को आधे अंग के गहने दिए थे। इन गहनों को देकर कहना कि ....
...बगड़ावतों ने किसी की आस अधूरी नहीं रखी।
भोजा, मैं रणांगण में पहले जा रहा हूं।
70
जयमती भाभी सा आप...
देवर जी मेरी यह पायल मत खोलना, तुम्हारे शरीर से
नहीं करेगा।
हा: हा: घोड़े के पैर में पायल बांध कर आया। अरे स्वयं पहन लेता नेवा रावत!


नेवाने पायल छिटका दिया।
तलवारों से केसर टपकता था, भालों से सिन्दूर.... नेवा अपने रक्त से होली खेल गए।
बाह रावत का भी अन्त हो गया।
हा!
सादू जीजी, हीरादासी को लेकर मालासर की पहाड़ियों पर चले जाइए। आपके वीर बेटे हैं; बगड़ावतों का प्रतिशोध ले सकेंगे।
71
तुम जयमती?
इस भारत का कारण मैं ही हूं। अपने खंग-वीन्द के साथ रण मे उतरूंगी।
युद्ध मे पीछे मुड़ कर मेरी चिन्ता मत करना।


तलवार का एक तिरछा वार जयमती ने कलाई अड़ा दी।
चूड़ियां छन्न हो गईं।
भोजा पीछे घूमा।
क्या हुआ रानी?
आह!
यही अन्त था।
बगड़ावतों के खेड़ों पर लूट मच गई। सोना-चांदी, माणक-मोती, गाएं-घोड़े......।
बगड़ावतों के घरों में बूढ़े-बच्चे जो भी मिले तलवार के घाट उतार दिए गए।
ठहरो कालूमीर, राजा जी ने कहा है एक संपोले को मत मारना।



क्या नाम है तेरा?
भूणां।
राजाजी, बाह रावत का यह लड़का भूंणा बचा है।
रानी सांखली की पुत्री तारा है। उसके साथ यह भी पल जाएगा।
मूंणा की कनिष्ठिका काट अपना जांघ चीर कर, रक्त मिला कर राजा ने उसे धर्म पुत्र बना लिया।
तुम्हारा नाम कुंवर खांडेराव होगा।
73
बगड़ावत महागाथा
राख ढंके अंगारे
रांण के साथ जुटी सेनाओं ने बगड़ावतों के खेड़ों को राख कर दिया।


राजशाही के प्रतिरोध में उठी लहर बिखर गयी पर समाप्त नहीं हुई।
रानी जयमती न रांण की रही, न बगड़ावतों की। बस लोग कट मरे।
रांण के पक्ष में कुछ स्वार्थवश जुटे थे, कुछ सत्य, धर्म और रिश्तों के कारण.... भारत के बाद उनमें फूट पड़ गई।
राजा निर्दयी है। बच्चों का क्या दोष था?
बगड़ावतों की बेटी से मेरा निकाह करने का वादा किया था।
बेचारे कुदाल फावड़े तक लेकर हमारा सामना करने आए थे।
खून हमारा बहा, मिला क्या?
राख दबी चिन्गारियों को हवा लगने लगी थी।
हत्यारे!
सवाई भोज का एक पुत्र देवनारायण मालवा में नाना के यहां पल रहा था


दूसरा अजमेर के क़ाम-दार पातू गोरवाल के पास था।
बिजौरी कंजरी, मेरे पिता भोजा ने आपके आधे अंग के गहने सौंपने को कहा था।
हे ईश्वर!
शरीर तो सजा लूं पर देखने वाला तो चला गया बेटे मेंहदू।
बिछुड़े मिले।
मैं रांण का कुंवर खांडेराव हूं, तलवार निकालो।
मैं भोजा रावत का बेटा मेंहदू हूं। तुम तो मेरे चचेरे भाई हो।
75
बगड़ावतों का घाती राजा दुर्जनसाल ने तुम्हारी चट्टी अंगुली काट कर अपना धर्म पुत्र बनाया था।
खांडेराव ने अपनी अंगुली देखी।
रांण के बना चारण ने पुष्टि की
हां कुंवर, आप बाह रावत के पुत्र हैं। नाम भूंणा था।


हम अपने बाप-चाचाओं का बदला लेंगे।
अभी तो मैं अजमेर लौट रहा हूं मूंणा
आपके पिता नाहरावत की घोड़ी 'बोर' भील सरदार ने लूटा था।
तो पहले वही!
76
खांडेराव ने रांण के सैनिकों, उमरावों के साथ भीलों के पाल पर चढ़ाई की।
उन भीलों ने रांण का पक्ष लिया था अब भुगतें।
उसी समय बादशाह तलावत खां रांण पर चढ़ आया और दुर्जनसाल को बन्दी कर ले गया।
सवाई भोज की लड़की दीपकंवर तो जंग में मारी गई अब अपनी बेटी तारा से मेरा निकाह कराओ।
तुम्हारी यह जुर्रत!
भीलों को पराजित कर बोर घोड़ी को लेकर खांडेराव रांण लौटा तो उल्टे पांव राजा को छुड़ाने के लिए चढ़ाई करनी पड़ी।

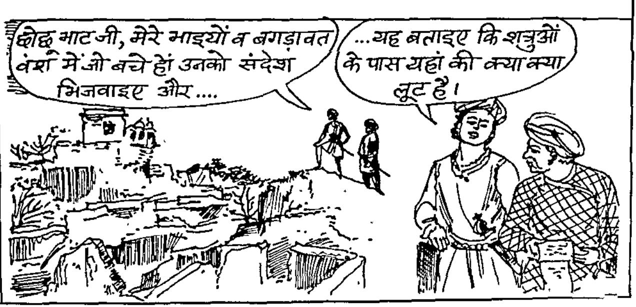

बादशाह तलावत खां हार गया। खांडेराव की शक्ति और बढ़ गई।
तुमने मुझे बचाया बेटे।
बगड़ावतों का दूध उफान ले रहा है।
हमारे बुरे दिन।
छोछू भाट मालवा से देवनारायण को वापस लाने चला।
77
बगड़ावतों का नाश करने में एक जुट हुए दल धीरे-धीरे टूट रहे थे। मेंहदू, खांडेराव शक्ति संचय कर रहे थे।
देवनारायण को लाने के लिए छोछू भाट प्रयत्नरत था।
मैं नारायण का दर्शन करने आया हूं।
पहले भोजन
छोछू, देवा को भारत की बात बता कर मालवा से ले जाएगा। मैं उसकी थाली में जहर मिला देती हूं।
साडूमाता ने छोछू भाट और पुत्र देवनारायण को थाली परोसी।


आप तो हमारे कुल के भाट हो
मैं थाली बदलूंगा।
नहीं बेटा, नहीं!
मां, मेरी आशंका ठीक थी।
मैं भाट जी से पहले पूरी
बात सुनूंगा।
78
छोछू भाट ने बगड़ावतों
की दुखांत कहानी सुनाई।
मेरी नीलागर घोड़ी तैयार कराओ
और ग्वालों से कहो हम बदनोर
लौट रहे हैं।
जो आज्ञा
कुंवर
देवनारायण मालवा
से चल पड़े।


रास्ते में हीरा दासी मिली।
मेरी स्वामिनी जयमती तो भारत में जूझ गई। मैं कलेजे में फांस लिए जीवित हूं।

79


गोठां की हालत देखी नहीं जाती।
गोठां फिर से बसेगा।


छोछू भाट जी, मेरे भाइयों व बगड़ावत वंश में जो बचे हों उनको संदेश भिजवाइए और....
...यह बताइए कि शत्रुओं के पास यहां की क्या क्या लूट है।



बूली घोड़ी सावर के दीया के पास है। छल-बल से वापस लेने की शुरुआत वहीं से करें
हमारे पास सैन्यबल अभी नहीं पर बुद्धि बल की कमी नहीं
इस भूमिको फिर बसाना पुन्य का काम है।
८०
भाट जी, हम दोनों ही सावर चलेंगे।
दीया सौगन्ध पर ही विश्वास करता है।
तो आप भी सच्ची सौगन्ध खायेंगे और उसे इस तालाब तक लायेंगे। मैं यहीं प्रतीक्षा करूंगा।
सच्ची सौगन्ध कैसे?
भाट जी, इस चिड़िया को अपने कपड़ों में छिपा लीजिए।
यदि सौगन्ध खानी पड़े तो इस पर हाथ रख कर कहियेगा इस जीव की सौगन्ध।


छोडू भाट गढ़पति दीया के पास पहुंचा।
मैं अजमेर दरबार का भाट हूं।
अजमेर के कुंवर जी शिकार पर अकेले घोड़ा दौड़ाते हुए तालाब तक आए हैं।
वे जल्दी में हैं। मैं उन्हे तालाब तक छोड़ कर आया हूं।
आपके निशाने की तारीफ सुनी है, बुला रहे हैं।
सौगन्ध खा।
इस जीव की सौगन्ध।
बूंली घोड़ी पर सज संवर कर चलिए। कुछ गांव पुरस्कार में मांग लीजिएगा।
आपके मामाजी के कुंवर प्रसन्न होकर पांच-दस गांव भी दे देंगे।



देवनारायण से सामना हुआ
भाट, तूने अपने जीव की झूठी कसम खाई।
यह रहा जीव।
उल्टे भाले की चोट ने दांत तोड़ दिए।
रावत भोज के भेट की पहली भेंट।
अभी तो बूंली घोड़ी ही ले जाते है। तुझे युद्ध में देखूंगा।
82
बूंली को गोठां में ले आए।
छोछू भाट जी रांण में भूंणा के लिए हमारा सन्देश ले जाओ कि गोठां बस रहा है।
आप पर विश्वास है। मैं भूंणा से मिलने आया हूं।
छाछू भाट रांण में पातु कलाली से मिला



यह नाम यहां मत लेना। यहां कुंवर खांडेराव हैं।
पुष्कर मेले में हैं। वहीं मिलो।
ठीक है पातू। बगड़ावतों के बेटे जब रांण पर प्रहार करेंगे तुम सहायता करोगी।
यह संयोग ही है भूणांजी। आपके पिता के हाथी जयमंगला, गजमंगला व कुछ अन्य वस्तुएं यहीं कुमावतों के पास हैं।
रांण के सैनिकों के साथ मैं छीन लूंगा।
पुष्कर के मेले में
रांण के दुर्दिन कब आएंगे?
नारायण से कहना पिलोदा के पतन के बाद।
भाई भूणां का संकेत ठीक है। हम उमराव रतन सिंह के पिलोदा को जीत लेते हैं।
कुछ करने को तो मिला


पांच भाइयों की सम्मिलित शक्ति तो है।
ग्वालों पर अचानक आक्रमण करके पिलोदा की गाएं छीन ली।
यह पशुधन हमारे ही बाप-चाचाओं का था।
पिलोदा के घोड़ों को देवनारायण की सैन्य टुकड़ी ने छीन लिया।
गाएं और घोड़े गोठां पहुंचा दिए गए।
सीधे मुठभेड़ से बचना है। जब शत्रु में खलबली मचे तो बलीते की तरह उनमें घुस पड़ो।
यही कमी है, बजाए
रह वे भाले की तरह
पटते हैं।

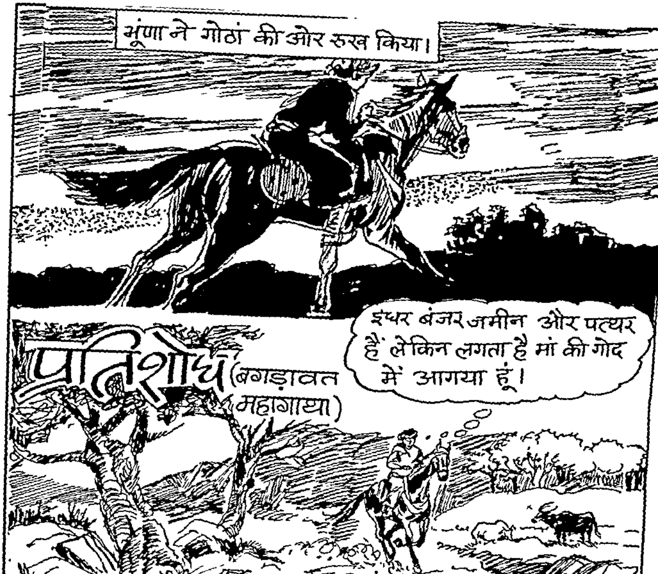

देवनारायण की युक्ति के अनुसार पिलोदा के एक भाग में आग लगाई गई।
चलें
बस्ती में छापा पड़ा और..
पिलोदा घिर रहा है, भागो!
..सैनिक बिखरे तो तलवारें आड़े आगईं।
रावल रतन सिंह को मार कर पिलोदा जीत लिया गया।
हम धीरे-धीरे रांण को कमजोर करेंगे फिर आखिरी हल्ला.... और बगड़ावतों का बदला।
रांण में
देव नारायण, मेहदु ने पिलोदा छीन लिया।



कुंवर खांडेराव, तुम देवनारायण और मेंहदू का सिर हाजिर करो!
कांटे से कांटा निकालूंगा।
मैं भला अपने ही भाइयों की हत्या करूंगा?
पहले तो पता नहीं था अब तो पुराना हिसाब चुकाना है।
खांडेराव सैन्य टुकड़ी लेकर मारवाड़ के चांदरुड़ स्थान पर पहुंचे।
यहां राजा के साले सातल, पातल हैं। दो सिर ही तो चाहिए।
तुम दोनों ने मेरी अंगुली कटवाई थी। मैं तुम्हारे सिर ले जाऊंगा।
रांण में रानी आरती उतारने आई।
हाय, हाय! मेरे ही भाइयों के सिर।



मेरे भाइयों के होते तो मेरी आरती होती, अपने भाइयों के देख कर विलाप !
87
खांडेराव ( भूंणा ) को बन्दी बना लिया गया।
धर्म बहन तारा ने राजा से अनुनय की।
भैया खांडेराव आपको बादशाह की कैद से छुड़ा कर लाए थे।
उन्होंने रात के अंधेरे में अनजाने ही सातल-पातल मामा को मारा
मैं भूंणा ही बनना चाहता हूं।
आप भैया को क्षमा कर दीजिए।
ठीक है, मैं प्राणदण्ड न देकर रांण से निष्कासित करता हूं।
प्राण बचाने का ऋण कभी चुका दूंगी।



मूंणा ने गोठां की ओर रुख किया।
इधर बंजर जमीन और पत्थर हैं लेकिन लगता है मां की गोद में आगया हूं।
प्रतिशोध (बगड़ावत महागाथा)
४४
भाइयों ने गोठां में मूंणा का स्वागत किया
कुंवर खांडेराव!
नहीं मूंणा रावत!
मूंणा, अचानक रांण क्यों छोडना पड़ा?
राजा के दोनों साले से मैंने अंगुली काटने का बदला ले लिया था



तुम रांण में इतना समय बिता चुके हो वहां की जानकारी आक्रमण के समय काम आएगी।
सीधे आक्रमण के काबिल हम हैं क्या?
सच है कि हम अभी रांण की सेना का सामना नहीं कर सकते...
...लेकिन भूंणा हम बुद्धि से काम लेंगे।
रानी जयमती के कारण भारत हुआ तो हमारी तीन पीढ़ियों का लहू बह गया।
दादा बाघ, बाप-चाचे और हमारे छोटे-छोटे भाई-बहनों का।
उनका दोष भी क्या था?


भारत में रांण का पक्ष मजबूत था और दूसरे राजाओं ने उसका साथ दिया था।
अब हम उसे अकेले और भी अकेले कर देंगे।
कैसे?
खट।
हम कुछ ऐसा करेंगे कि रांण अन्यायी लगे।
तलवारें ही बंट जाएं।
ग्वालों को कहो, गायों को रांण की सीमा में खेतों में चराएं।
अच्छा, तुम कोई योजना सोच चुके हो।
90
इससे तो हमारी गाएं पकड़ ली जाएंगी।
मैं यही चाहता हूं। अपनी गाएं छुड़ाने के लिए तब हम आक्रमण करेंगे।
गायों की रक्षा में शस्त्र उठाना धर्मयुद्ध होगा



देवनारायण की गाएं रांण के सीमावर्ती खेतों को तहस-नहस करने लगीं
ग्वालों और पटेलों में थोड़ी झड़प भी हुई।
अरे पटेलां, ये कृष्ण की गाएं हैं। सबे भूमि गोपाल की।
पटेलों ने रांण के दरबार में शिकायत की।
हुजूर, गायों से हमारी रक्षा कीजिए
जाहिल-गंवारों, अब रांण की सेना ढोर-डांगरों को हँकाती फिरेगी?
दुहाई है अन्नदाता। गाएं बहुत हैं। ग्वालों ने हमें पीट कर भगा दिया।



दीया, कालूमीर जाओ, गायों को घेर लो।
ग्वालों ने सैनिकों के सामने प्रतिरोध नहीं किया।
92
गायों को राताकोट ले चलो।
दीयाजीराव, आप क्षत्रिय हैं। गायों पर अत्याचार न होने दें।
तुरुक को रोकें।
कालूमीर, अपने सिपाहियों को गायों पर जुल्म करने से रोको।
राजपूत इसे सहन नहीं करेंगे।
हुजूर हम गायों को पानी पिला दें?
मुझ पर हुकुम चलाता है!


गाएं प्यासी हैं रहम करिए हुजूर?
खामोश! इन जानवरों को तो मैं अपने सरवाड़ में पानी पिलाऊंगा।
सब गाएं राताकोट जाएंगी।
वल्लाह! जिन्हें हमने घेरा है वे हमारी हुईं।
सैनिकों की फूट का ग्वालों ने फायदा उठाया।
काम बन गया।
गोठां की ओर हांको।



रांण का राजा दुर्जनसाल।
गायों को घेरा गया था अन्नदाता लेकिन उमराव दीयाजी और कालूमीर में झगड़ा हो गया।
गाएं छूट गई।
आगे बोल
पटेल राज छोड़ रहे हैं।
मुझे ही देखना होगा।
हाथी तैयार करो।
राजा ने सेना के साथ चढ़ाई की।
गायों को ले चलो राता कोट में बन्द करदो।
ग्वालों ने जन विद्रोह सुलगाया।
राजा अधर्मी है।
राजा ने गाएं पकड़ ली!
गौवंश पर अत्याचार!
अन्यायी का नाश हो!


जनचेतना ने 'भारत' में भी बगड़ावतों का साथ दिया था पर आधे मन से। इस बार के स्फुलिंग ने दावानल का रूप धर लिया था।
देवनारायण की जय।
जय गोमाता!
95
रांण के पक्ष में प्रत्यंचाएं कसी नहीं।
गायों के मामले में हम नहीं पड़ेंगे। राजा ने बुरा किया
हमारी गाएं राताकोट पहुंच गई हैं। अब हम हथियार उठाएंगे।
युद्ध घोष होगा - 'गायों को मुक्त कराना है।' इसी बहाने बाप - चाचों का बदला लेना है।
रांण की नीवें कमजोर हो चुकी हैं। खाली हाथों भी जोर लगाएंगे तो ध्वस्त हो जाएगा।


खुदा! मौत का सैलाब!
रांण की सेना अनियंत्रित ढंग से आक्रमण की झेल रही थी।
खौफ... खौफनाक वहशी हैं ये!
आह!
दरातियाँ उठती हैं तो कोई उनका मुकाबला नहीं कर सकता!



राता कोट हम जीत लेंगे।
दबाव बढ़ता जा रहा था।
टोडा का शासक बकरम दे सोलंकी मारा गया।
इ ईक!
सावर के राजा दीया का प्राण-दीप बुझा।
मैंने कहा था रातकोट में मारूंगा।
देवनारायण!



कालूमीर पठान का अन्तकाल आ पहुंचा।
हमारे छोटे-छोटे भाइयों को तुमने ही आग में झोंका था।
हम तुम्हें दोजख की आग में भेजते हैं।
96
गाएं कोट से बाहर निकाली जा रही थीं।
राजा दुर्जनसाल का भाई नीमदे महल की पिछली खिड़की से भागा।
वह भागती भीड़ में शामिल हो गया।
भागते निहत्थे सैनिकों को जाने दो। जल्दी ही वे अपने स्वामी बदल लेंगे।



रताकोट पर हमारा अधिकार होगया। अब सीधे रांण का पानी परखेंगे।
रांण का राजा दुर्जनसाल भयभीत था।
रताकोट छिन गया। दीया, कालूमीर मारे गए। अब देवनारायण रांण की ओर आ रहा है।
भूंणा, रांण पर चढ़ाई करने का नेतृत्व तुम सम्भालो।
99
तो फिर चलें। शत्रु को सम्हलने से पहले ही छेंक लें।
राजा दुर्जन साल एक बहुरुपिए को राजा बना कर छिप गया था।
ही ही... मैं यहां का राजा, पूरे रांण का राजा।


देवनारायण और भूणा को बहुत कम प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।
राज दरबार.... राजा अकेला सिंहासन पर बैठा है!
ही ही.. मैं राजा, आप राजा.. ..सब राजा हैं।
बहुरुपिया
यह सिंहासन मेरा, रांण मेरा....
भाग, नहीं तो दो टुकड़े कर दूंगा।
। वह छिप गया?
नारायण, महल में एक गुप्त सुरंग है। आओ वहीं देखते हैं।


मैं बचपन में बस एक बार इस सुरंग में आया था।
हाः। राजा दुर्जनसाल यहीं हैं... तारा बहन तुम भी?
भैया खांडे राव, मेरे पिता को छोड़ दो। क्षमा कर दो।
101
इन्होंने भी तुम्हें प्राणदान दिया था।
ये धर्म के सही तुम्हारे भी पिता हैं।
राजा दुर्जनसाल को देवनारायण ही क्षमा कर सकते हैं।
मेरे मन से प्रतिशोध की भावना, हिंसा की ज्वाला अब मिट गई है।
मैं क्षमा करता हूं। अपने दादा, पिता, चाचाओं के खून से आपको माफ करता हूं।


देवनारायण को गोपालक के रूप में और अपने पूर्वजों का प्रतिशोध लेने से ईश्वर के अवतार के रूप में मान्यता मिली।
उन्हें भगवान कृष्ण का अवतार माना गया।
लोकमानस ने श्रद्धा से उनका जन्म कमल के पुष्प से होना बताया।
102
देवनारायण की गाथा पड़ों में चित्रित की गई और गूजर इसके भोपे बने।
जंतर वाद्य के साथ पड़ बांच कर कथा कही जाती रही.... कही जाती रहेगी।
समाप्त





कवि, कथाकार, चित्रकार साहित्य के लेखक श्री अनन्त ... उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले में हुआ । राजस्थान में 1962 से तक लगभग ढाई सौ चित्रकथाएँ, 60 कविताएँ और अनगिनत व्यंग्य - ... हो चुके हैं । अभी जयपुर से प्रकाशित पाक्षिक के सम्पादक हैं ।



